International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

खीची चौहान शासकों की उत्पत्ति: एक ऐतिहासिक विश्लेषण

सुबोध कुमार शर्मा[1], डॉ. विधि शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, [2]आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में चौहानों की 24 प्रमुख शाखाओं में से सर्वाधिक प्रसिद्ध 'खीची शाखा' की उत्पत्ति, एवं 'खीची' उपनाम के बारे में प्रचलित विभिन्न मतों का तथ्यपरक ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है I

सांभर और जायल के चौहानों से सम्बंधित इस 'खीची चौहान शाखा' का विस्तार और विकास मध्यकाल में मालवा में 'खीचीवाडे' के नाम से प्रसिद्ध मऊ मैदान, गागरोन, गुगोर, रामगढ़, चाचरणी, राघोगढ़, बजरंगगढ़ जैसे क्षेत्रों में हुआ I

विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथो एवं साक्ष्यों पर आधारित इस अध्ययन से चौहान वंश के मूल पुरुष, मूल स्थान, वंशावली एवं इसकी प्रसिद्ध शाखा खीची के खीची उपनाम की उत्पत्ति को समझने में मदद मिलेगी I

बीज शब्द : राजपूत इतिहास, चौहान वंश, खीची चौहान, खीचीवाडा, राघोगढ़, मध्यकालीन भारत

परिचय

राजस्थान के 36 राजकुलों में चौहान वंश का विशेष स्थान है I विदेशी इतिहासवेत्ता कर्नल जेम्स टॉड द्वारा भारतवर्ष के समस्त राजकुलों में वीरता और पराक्रम में चौहानों को प्रथम स्थान पर रखा गया है I **टॉड के अनुसार** – "सम्पूर्ण राजस्थान में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ प्रतापी चौहान वंश का चिह्न नेत्रों के सामने न आये I यद्यपि प्रत्येक जाति के इतिहास में गौरव का वर्णन किया गया है, जैसा कि सिसोदिया वंश के इतिहास से पाठकों को प्रकट हुआ तथापि जिस जाति के साथ मैनें बहुत काल तक वास किया है और जिनके इतिहास को बहुत अच्छी तरह से मैं जानता हूँ तथापि मेरी विवेक - बुद्धि कहने के लिए मुझे बाध्य करती है कि भारतवर्ष के सब राजकुलों में चौहानों को प्रथम स्थान प्राप्त होता है I" [1]

विदेशी आक्रान्ताओं से स्वदेश की रक्षा हेतु चौहानों का बलिदान भारतीय इतिहास में अमर है I

यूनानी आक्रान्ता सिकंदर का सामना सिन्धु तट पर चौहान वंश की माल्हन शाखा द्वारा किया गया I गजनी के सुल्तान माऊदूद द्वारा भेजे गए तुर्क सेनापति के आक्रमण से देश की रक्षा हेतु ददरेवा के खीची सामंत गोगाजी चौहान अपने 45 पुत्रों और 60 भतीजों सहित वीर गति को प्राप्त हुए I इस कड़ी में भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी वीरता और पराक्रम से चौहान वंश के गौरव को चरम पर पहुँचा दिया I

रणथम्भोर के प्रतापी शासक हम्मीर देव चौहान तो एक विधर्मी व शत्रु मुसलमान को अपने यहाँ शरण देकर आर्य धर्म व नीति का जिस प्रकार पालन किया उसके कारन आज भी यह कहावत प्रचलित है –

> ' सिंह गमन, सत्पुरुष वचन : कदली फलत एक बार
> त्रिया तेल, हम्मीर हठ : चढ़े न दूजी बार ' [2]

मुहणोत नेणसी के अनुसार इस गौरवशाली चौहान वंश की कुल 24 शाखाएँ निम्नानुसार थी –

1. हाडा 2. खीची 3. सोनगिरा 4. देवड़ा 5. निर्वाण 6. रासकिया
7. बंटक 8. गोला 9. डेडरिया 10. बगसरिया 11. चीबा 12. चाहिल

13. सेलोत 14. बेहल 15. कोड़ा 16. बोलत 17. गोलासण 18. बैस
19. सेपटा 20. ढीमडिया 21. म्हालण 22. कांपलिया 23. नहरवण 24. हुरडा
चौहान वंश की इन 24 शाखाओं में से 'खीची' एक अतिप्रसिद्ध शाखा है I
ब्रिटिश इतिहासकार H.G. कीन के मतानुसार खीची शाखा को चौहानों में वही स्थान प्राप्त है जैसा कि मेवाड़ या उदयपुर में सिसोदियों का है और ये दोनों शाखाएँ अगुआ होने और नितांत शुद्ध रक्त होने में एक दूसरे के समकक्ष है I [3]

खीची चौहान शासकों की उत्पत्ति :

खीची भी वस्तुतः चौहानों की ही एक शाखा है अतः खीचियों की उत्पत्ति को समझने के लिए पहले चौहानों के मूल पुरुष, वंशावली एवं मूल स्थान का निर्धारण करना होगा I
चौहानों के मूल पुरुष के बारे में विभिन्न मत प्रचलित हैं -

- इतिहासकार टॉड के अनुसार भारतवर्ष के 36 राजवंशों में सूर्यवंशी चौहान सर्वश्रेष्ठ हैं जिनका मूल पुरुष 'सम्राट चाहमान' था जिसने राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा की थी I उसके वंशज चौहान, चहुआन, मराठी के चव्हाण कहलाए I [4]
- पृथ्वीराज विजय-काव्य के लेखक जयानक के अनुसार –

'**करेण चापस्य हरेर्मनीषया, बलेन मानस्य नयस्य मन्त्रिभिः।**
धृहस्य नामाग्निम वर्ण निर्मिता, सह चाहांमनोर्यामति प्रथां पर्यो ।।'
(पृ. वि. काव्य)

अर्थात् चौहान राजवंश के मूल पुरुष 'चा-ह-मा-न' थे जिनका वैसा नाम पड़ने का कारण यह था-कर में चाप ग्रहण करने से, मन में हरि को धारण करने से, वल में मान धारण करने से तथा मंत्रियों द्वारा नय (राजनीति) धारण करने से, यह वीर पुरुष इन गुणों के अगले अक्षरों से निर्मित 'चा-ह-मा-न', इस नाम को प्राप्त हुआ। इससे पता चलता है कि चौहान इस राजवंश के मूल पुरुष चाहमान का अपभ्रंश है। [5]

ब्रह्माजी ने पुष्कर की रक्षा के लिए विष्णु से प्रार्थना की। इस पर विष्णु ने सूर्य की ओर देखा तव सूर्यमण्डल से एक धनुर्धारी पुरुष उपस्थित हुआ और उसने राक्षसों को मार भगाया। वही पुरुष अन्त में 'चाहमान' नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके वंशजों ने भी सभी दिशाओं को विजय कर अपने साम्राज्य की स्थापना की। उन्हीं में से वासुदेव नामक एक बहुत प्रसिद्ध राजा हुआ। यह चौहान कुल 'सूर्यवंशी' है। [6]

- हमीर महाकाव्य में जयचन्द्रसूरि ने लिखा कि एक समय ब्रह्मा यज्ञ करने के निमित पवित्र भूमि की खोज में फिरते थे। उस समय उनके हाथ से एक पुष्प गिर पड़ा। जहां वह पुष्प गिरा उस जगह का नाम 'पुष्कर' हुआ और वहीं पर ब्रह्माजी ने अपना यज्ञ करना प्रारंभ किया, परन्तु वहां पर राक्षसों का भय देख उन्होंने सूर्य का ध्यान किया। इस पर सूर्यमण्डल से एक दिव्य पुरुष उतर आया जिसने यज्ञ की रक्षा कर ब्रह्माजी को सन्तुष्ट किया। वही वीर पुरुष 'चाहमान' कहलाया और ब्रह्माजी की कृपा से सम्राट (महाराजा) वनकर राजाओं पर राज्य करने लगा। उसके वंशज चौहान कहलाये। जो चौहान राजवंश सूर्यवंशी है। [7]
- डा. आर.बी.सिंह ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री ऑफ चाहमान में ऋग्वेद की दान स्तुति में वर्णित अभयवर्तिन चयमान, जिसने वृचीवन्तों पर विजय प्राप्त की थी, के आधार पर चयमान को चौहानों का मूल माना है I [8]

ये विशेषताएं यह बताती है कि चाहमान नाम का इस वंश का कोई आदि पुरुष रहा है जिसने अपने भुजबल से एक नवीन राज्य की स्थापना को हो। [9]

चौहानों की वंशावली एवं मूल स्थान -

अब तक प्राप्त सबसे प्राचीन शिलालेख गुजरात के भरूच से मिला है जो 756 AD का है, और यह गुजरात की चौहान शाखा को लगभग 600 AD तक ले जाता है I चौहानों की मुख्य शाखा के बारे में जानकारी देने वाला सबसे पुराना स्त्रोत आज भी हर्ष शिलालेख है जो 973 AD का है I [10]

सम्राट पृथ्वीराज तृतीय के काल के जयानक (जोनराज) कृत 'पृथ्वीराजविजय काव्य' में पृथ्वीराज से पूर्व की वंशावली देते हुए चौहानों का प्रथम पुरुष चांपहरि, चांपमान लिखा है, जिसका उत्तराधिकारी वासुदेव हुआ, जिसने शाकंभरी क्षेत्र प्राप्त किया। उसके बाद सामंत (देव) राजा हुआ। सामंत के उत्तराधिकारी क्रमशः जयराज, विग्रहराज, चन्द्रराज आदि हुए। इस क्रम में सोमेश्वर का 27वां, पृथ्वीराज (तृतीय) को 28वां और हरिराज को 29वां राजा होना लिखा है। [11]
नयचन्द्र सूरि कृत 'हम्मीर महाकाव्य' में उल्लेख है कि पुष्कर में चाहमान के प्रकट होने के बाद उसका प्रथम उत्तराधिकारी वासुदेव हुआ। वासुदेव के बाद उसके उत्तराधिकारी क्रमशः नरदेव, चन्द्रराज, जयपाल, जयराज, और सामंतसिंह हुए। [12]
बिजोलिया शिलालेख – वि.स. 1226, फाल्गुन बुदी 3 के अनुसार चाहमान के वंश में सामंतदेव हुआ जो वत्स गोत्रीय ब्राह्मण था और अहिच्छत्रपुर का शासक था I यह सामंतदेव चाहमान के वंशज वासुदेव का वंशज था न कि पुत्र या उत्तराधिकारी I [13]
इस प्रकार चौहानों का राज्य पहले अहिच्छत्रपुर में था जो उत्तरी पंजाब की राजधानी थी जिसके खंडहर बरेली से 20 मील पश्चिम में रामनगर के पास मौजूद है I [14]

अहिच्छत्रपुर प्राचीन पांचाल देश की राजधानी रहा है I चीनी यात्री हवेंसांग ने भी इसका उल्लेख किया है I जबकि इतिहासकार ओझा और हरविलास शारदा दोनों अहिच्छत्रपुर को मारवाड़ के नागोर नगर का प्राचीन नाम ही मानते हैं। [15]
इतिहासकार गौरी शंकर हीराचंद ओझा ने अपने ग्रन्थ सिरोही राज्य के इतिहास में मूल पुरुष चाहमान को मानते हुए लिखा है कि उसके पुत्र वासुदेव ने 686 ईस्वी में अहिच्छत्रपुर (मारवाड़ के नागोर नगर का प्राचीन नाम) से सांभर आकर इसे अपनी राजधानी बनाया तथा वासुदेव के उत्तराधिकारी क्रमशः सामंतदेव, जयराज, विग्रहराज, चन्द्रराज हुए I [16](टिप्पणी – इतिहासकार ओझा और हरविलास शारदा दोनों अहिच्छत्रपुर को मारवाड़ के नागोर नगर का प्राचीन नाम ही मानते हैं, जबकि डॉ भंडारकर, गंगा सिंह खीची और ASI उ.प्र. जिल्द 2, पृ. 16 के अनुसार यह अहिच्छत्रपुर प्राचीन पांचाल प्रदेश की राजधानी था)

पं विश्वेश्वर नाथ रेऊ ने भी अपनी पुस्तक 'भारत के प्राचीन राज्य' में लिखा है कि 686 ईस्वी के लगभग वासुदेव चौहान ने अहिच्छत्रपुर से आकर सांभर में राज्य स्थापित किया I इनके अनुसार चौहान राजवंश की नामावली निम्नानुसार थी – 1. चाहमान 2.वासुदेव 3. सामंतदेव 4. जयराज 5. विग्रहराज 6. चन्द्रराज
पं रेऊ ने पृथ्वीराज द्वितीय को 29 वा, सोमेश्वर को 30 वा और पृथ्वीराज तृतीय को 31 वा राजा बताया है जिसका उत्तराधिकारी हरिराज हुआ था I [17]
कतिपय स्त्रोत चाहमान का उत्तराधिकारी वासुदेव के स्थान पर सामंत देव को मानते हैं जिसने सांभर को राजधानी बनाकर इसे बसाया I इस सामंत देव के ही वंशज सांभरीराव कहलाए I
टॉड एक चारण परंपरा का उल्लेख करते हैं जिसके अनुसार 684 ईस्वी में अजमेर क्षेत्र के चौहान शासक दुलाराव / दौलतराव के शत्रुओं द्वारा मारे जाने के बाद उसके छोटे भाई मानिकराव / सामंतदेव ने अजमेर क्षेत्र से निकलकर देवी शाकम्भरी के आशीर्वाद से सांभर झील के निकटवर्ती क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया I [18]

टॉड और आर.बी.सिंह के अनुसार इसी मानिकराव का दूसरा नाम सामंतदेव था I इस मानिकराव अर्थात् सामंतदेव से निकलने वाले चौहान सांभरी चौहान कहलाए I [19]
डॉ देवीलाल पालीवाल के अनुसार यही माणिकराव / मानिकराव अथवा सामंतदेव खीची चौहानों का वंश संचालक था I

ढाढोन्या, परगना – राघोगढ़ के बडवा भाटों की पोथियों के अनुसार चौहान वंशावली निम्नानुसार थी –
अजयपाल जी त्रेता में जन्में और उन्होंने अजमेर बसाया I इन्हीं के वंशज राजा सील महाभारत में पांडवों की ओर से लडे और काम आये I अजयपाल जी का वंश वृक्ष निम्नानुसार था –
अजयपाल – जोधपाल – मानपाल – कल्यानपाल – तरपाल – सोनपाल – कंचनपाल – माधव – सांगदे – बरनराव – रतनदे राव – राजा समरथ - राजा सील – सादुलराव – किशनदास जी – हरजसराय – बुदयेन राव – बालमसी राव – झंगराव – कल्याणपतसी - जोधराव – संभराव (इन्होनें संभराई देवी के नाम पर सांभर शहर बसाया) – माणकराव (इनको देवी संभराई ने वरदान दिया कि घोड़े पर बैठ कर जहाँ तक जायेगा, सोने की धरती हो जायेगी, पीछे न देखे, किन्तु उन्होंने सात कोस चलकर पीछे देख लिया सो सोने का नमक हो गया I)

" जित्ती धरा सिर शेष के, खग पगल्व ही पंगाय I
टूटी माणक राव को शक्ति संभरा माय II " [20]
माणकराव ने 747 संवत में सांभर शहर बसाया –
" सात सौ सेंतालिस समय, माता बाली बेस
संभराय टूटी सगत माणकराव नरेश " [21]

माणकराव के चौबीस पुत्र थे –
पाटवी राजा मानदेव जी, अजयराव जी, अष्टपाल जी, भीमजी, भद्दोजी, मालौजी, भोमोजी, हीरोजी, बागोजी, मोटोजी, करमोजी, खीमोजी, सूरोजी, रायचंद जी, गूगोजी, गेजोजी, तारोजी, अणसी जी, चुंदोजी, तुलसी जी, धूंदोजी, पेमोजी, बीरोजी, देवजी

इनसे चौहानों की चौबीस शाखा बन गई, जो निम्न हुई –
खीची, हाड़ा, बागरेचा, बागेटा, कटारिया, मोरंग, भमरेचा, खेमरचा, सुणइया, रेवाडिया, बागडेया, तवेरचा, नाहर, रुणइया, चूंडेरा, तुलछी, रावटा, धंधोदिया, गोरावल, भदौदिया, नरवाण, मोहल, सेवटा
अजयराव जी से खीची वंश चला I इन्होनें संवत 775 में खीचीपुर पाटण बसाई I यह खीचीपुर पाटण पंजाब में है I इनका राज्य विस्तार 1 लाख 19 हजार ग्रामों पर था I [22]

गुलाब बाई की पोथी में एक जगह संवत 775 व दूसरी जगह संवत 809 में पाटण बसाई ऐसा लिखा है I जसकरण की पोथी में केवल संवत 809 लिखा है I
सूर्यमल्ल मिश्रण और अन्य लेखकों ने परंपरागत रूप से चौहानों की 24 शाखाओं का उल्लेख किया है, जो विभिन्न व्यक्तियों, स्थानों या वस्तुओं के नामों से व्युत्पन्न मानी गई है I
निजामी ने डॉ आर. बी. सिंह की पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ़ चाहमान्स" (पृ. 46, फुटनोट 77) के अनुसार चौहानों की 24 शाखाएं निम्नानुसार बताई –
चौहान, हाडा, खीची, सोनगरा, देवड़ा, पाबिया, सांचोरा, गीलवाल, भदौरिया, निर्वाण, मल्लानी, पूरबिया, सूरा, मदरेचा, संकरेचा, भूरेच, बलेचा, तसेरा, चचेडा, रोसिया, चंदा, निकुम्भ, भंवर, बंकट [23]

चौहानों के मूल स्थान के बारे में निजामी के अनुसार अहिच्छत्रपुर के संबंध में इतिहासवेत्ता गौरीशंकर हीराचंद ओझा एवं हरविलास शारदा दोनों अहिच्छत्रपुर, पांचाल क्षेत्र का नहीं मानकर मारवाड़ के नागोर नगर का ही प्राचीन नाम मानते हैं I किन्तु इस संबंध में डॉ भंडारकर के मतानुसार जब चौहान पांचाल क्षेत्र से निकलकर सांभर आये तो उस समय वे अपने गृह प्रदेश 'सपादलक्ष' का नाम भी साथ लेकर आये I इसी कारण सांभर वाले भू-भाग का नाम भी सपादलक्ष पड़ा I
यह सपादलक्ष प्रदेश नागोर से सांभर के बीच स्थित भू-भाग का नाम रहा I उसके निकट वाला भू-भाग जांगल देश के नाम से जाना जाता था, जो नागोर के उत्तर- पश्चिम की ओर फैला हुआ था I इस प्रदेश पर भी सांभरी चौहानों का अधिकार रहा I [24]
गंगा सिंह खीची ने सम्राट चाहमान के वंशज वासुदेव द्वारा अहिच्छत्रपुर (पांचाल) से आकर सांभर को राजधानी बनाने एवं नागौर क्षेत्र में एक अलग अहिच्छत्रपुर राज्य स्थापित करने का उल्लेख किया है I कालांतर में यहाँ से चौहानों ने अजमेर एवं दिल्ली को अपनी राजधानियाँ बनाई एवं 'सांभरीश्वर' की उपाधि ग्रहण कर चौहान भारतेश्वर बने I नागौर, जायल, भदाणा आदि छोटे बड़े राज्य भी बने I पुष्कर, आबू आदि भी चौहानों के अधिकार में रहे I[25]

उपर्युक्त वर्णित समस्त मतों के विश्लेषण के पश्चात चाहमान के वंशज वासुदेव द्वारा अहिच्छत्रपुर (पांचाल) से आकर सांभर को राजधानी बनाने एवं नागौर क्षेत्र में एक अलग अहिच्छत्रपुर राज्य स्थापित करने को युक्तियुक्त माना जा सकता है I हालाँकि इस संबंध में उच्चतर शोध अपेक्षित है I

खीची उपनाम की उत्पत्ति एवं आदि स्थान

राजपूतों में बहुधा शाखा का नाम गाँव के नाम से या नामी पुरुष के नाम से प्रसिद्धि में आता है I किसी भी वंश या जाति की उत्पत्ति अथवा प्रसिद्धि उसके पूर्वज के नाम पर, राज्य व निवास स्थान के नाम से, उसके उत्तम कार्यों, उपाधियों अथवा विशेष गुणों के कारण हुआ करती है I इन्हीं कारणों से विभिन्न विद्वानों, इतिहासवेत्ताओं एवं साहित्यकारों ने अपने – अपने दृष्टिकोण से खीची चौहानों का वर्णन किया है I

खीची चौहानों के खीची उपनाम की उत्पत्ति एवं आदि स्थान के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है I खीचकोट (पंजाब), खीचपुर पाटन (पंजाब), खिलचीपुर, खीचीवाडा (मालवा), खीचीद (मारवाड़) नामक स्थानों के नामों से ज्ञात होता है कि जहाँ – जहाँ खीचियों का निवास हुआ, वहाँ – वहाँ उन्होंने अपनी शाखा के नाम पर स्थान बसाये I

1 **पूर्वज के नाम पर-**

- गंगासिंह खीची ने वंश भास्कर के आधार पर सांभर के राजा माणिकराव के दूसरे पौत्र खीचराज के वंशज खीची कहलाना बताया है I उनके अनुसार वंश भास्कर में अंकित है-

महुकर्मा (135) सुत अग्रज रामचन्द्र (136/1) मनउज्जल।
खीचीराज (136/2) अनुज गहण खल। I35II
संभरीक खिच्चीजिण संतति,
भुजबल अनड़ (अनम्र) हुवा बहु भूपति।

अर्थात् सांभरीश्वर महुकर्मा के दो पुत्र (1) रामचन्द्र और खीचीराज (अनड़) हुए, इन खीचीराज के वंशज खीची (चौहान) सांभरीश्वर कहलाए। [26]

- इसी मत का समर्थन करते हुए खीची वंश प्रकाश में कवि चैलदान खिड़िया ने बताया -

राजा महुकर्मा (संभरी) के सुत दोय।
जो जग जीत लेन प्रमत (114
रामचन्द्र सुं जे मोर कनिष्ठ खीचीराज
खीचीराज महावली तिनकी बहु आ काय।
प्रचंड पोहोमी धांन सौं सूं सिंघ पार सुभाय।
खीची त्रप के बैंस कज यह बणै कविता रूप [27]

इस प्रकार उक्त मत खीचराज से खीची चौहान शाखा की उत्पत्ति होना बताते हैं I

2. **राज्य अथवा निवास स्थान के कारण-**

गंगासिंह खीची ने इस संबंध में विभिन्न पुस्तकों में वर्णित मतों का निम्नानुसार संकलन किया है -

- हिन्दी विश्व कोष (जि. 6 पृ. 45 में अंकित है-चौहान 'खीच स्थान' में वास करते थे, इसी से 'खीची' कहलाए और वह स्थान खीचवार (खीचीवाड़ा) के नाम से विख्यात हुआ। [28]
- गुजरात राजस्थान (अंग्रेजी) पृ. 168 में लिखा है-'चौहानों का राज्य 'खिचपुर-पट्टण में था,जहां से खीची कहीजीया।' [29]
- आंवलियार राज्य का इतिहास: प्रतापसिंह में उल्लेख है - खीचपुर पाटण राज्य पर शासन होने के कारण खीची (चौहानों की) शाखा हुई। [30]
- हिस्ट्री ऑफ पंजाब (प्र. जिल्द, पृ. 65 सन् 1846 लन्दन) के अनुसार चौहानों का सिन्ध सागर दोआव पंजाब में राज्य स्थापित खीची जाति द्वारा हुआ, इससे खीची कहलाए। [31]
- खीची चौहान इतिहास संग्रह (कु. माधोसिंह खीची) में लिखा है-खीचपुर पट्टण (सिंध सागर दोआब पंजाब) को माणिकराव चौहान (सांभर) के छोटे बेटे अजेराव ने बसाया और उसी स्थान के नाम से 'खीची' कहलाए। [32]
- टॉड के अनुसार खीचपुर पट्टण (सिंध सागर दोआब पंजाब) पर शासन होने से चौहान खीची कहलाए I [33]
- खीची इतिहास : ठा. जुगलसिंह खीची (ह.लि.) में लिखा है-खीचपुर पट्टण में निवास के कारण चौहानों को खीची कहा जाने लगा । [34]

- रैवाकांठा डायरेक्ट्री (गुजरात) में अंकित है- खीचपुर पाटण (सिंध) पर सांभर के माणकराव (चौहान) के वंशजों का राज्य था, जो खीची कहलाए। [35]
- बही बड़वा ढोडोणिया (खोचीवाड़ा म.प्र.) में लिखा है- चौहान अजयराव (सांभर) ने खिचपुर पट्टण (पंजाब) बसाई। वहां राज्य करने से वे चौहान खीची कहलाए। [36]
- एनुअल एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट (खिलचीपुर राज्य) के अनुसार खीचपुर पट्टण राज्य अजय राव चौहान ने 684 A.D. में स्थापित किया जिससे वह वंश खोची (चौहान) कहलाया और उसी वंश के खिलचीपुर नरेश है। [37]
- भारत राज्य मण्डल ग्रन्थ के अनुसार अजेराव ने खिलचीपुर बसाया, जिससे खीची चौहान कहलाए गए I [38]

हिन्द राजस्थान, खीची वंशावली (पं.ॐकारलाल व्यास राघोगढ़), चौहान कल्पद्रुम (गुजराती पं. नानजी), तवारीख टोंक (गूगोर छबड़ा, पृ. 42), जयपुर राज्य का इतिहास (पृ. 96 पं. हनुमान शर्मा), रूलिंग प्रिंसेज एण्ड चीफ्स ऑफ इण्डिया, इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया आदि में भी यही अंकित है। [39]

- आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया (जि. 2, झारखोन-बजरंगगढ़) के अनुसार खीची जाति का नाम खीचीवाडा से पड़ा होगा जो भू-भाग काली मटियाली भूमि खीचर (खीची) किस्म के कारण वैसा कहलाया। [40]
- इतिहासकार सरदेसाई ने भी लिखा है कि पंजाब में खीचीपुर पट्टन के कारण खीची कहलाए I [41]

उपर्युक्त वर्णित मतों में अधिकांश में इस पर बल दिया गया है कि खीचीपुर पट्टन (सिंध सागर दोआब पंजाब) पर आरंभिक शासन होने से चौहानों की यह शाखा खीची कहलाई I

3. उत्तम कार्य, अद्भुत कार्य, उपाधि अथवा विशेष गुणों से-

गुणों के कारण नाम प्रसिद्ध होते हैं ' यानि नामानि गोणानि विख्यातानि महात्मन' (विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम 13) [42]

- **वंश भास्कर (सूर्यमल्ल मिश्रण) में लिखा है-**

के मागध इण विधि कहे, ग्रन्थों लिखि जस गात।
रामचन्द (संभर) अनुज अनड़ हुवो अभिधान।।46।।
बूठो मेघ नहीं जिण चेला, भै चकि भूप हुवा सब भेला।
जीमण खिचिबजि को दीधो जिम, आव्हव (नाम) खिच्चीराज हुवो इम।।

अर्थात् जब भयंकर अकाल से भयभीत व चकित होकर कई राजा, प्रजा सहित प्राण बचाने हेतु सांभर राज्य में आए तो चौहान राजा अनड़ ने उन्हें 'खीच' खिलाकर आश्रय दिया जिस पर उनका उपनाम खिचराज प्रसिद्ध हुआ और उनके वंशज खीची (चौहान) कहलाए। [43]

- जयपुर राज्य का इतिहास (पृ. 96, सन् 1937 : हनुमान शर्मा) के अनुसार अजेराव चौहान सांभर ने सोने-चांदी के सिक्के मिलाकर (खिचड़ी कर) बांटे और माणकराव चौहान (सांभर) ने गंवारों की खिचड़ी खाई थी अतः वे (खीची उपाधि के कारण) कहलाये। [44]
- ठा. बहादुरसिंह (मलसीसर) की पुस्तक में उल्लेख है- सांभर के आस-पास अकाल पड़ने पर, चौहान सांभरीश्वर लोगों को खीच (खिचड़ी) खिलाया करते थे। इससे इनको खीची (चौहान) कहने लगे। [45]
- ठाकुर माधो सिंह खीची के अनुसार बारहठ, चारण एवं भाटों का कथन है कि सांभर का चौहान वंश 'हठ' (सत्य-दृढ़-प्रतिज्ञा) करने वाले थे और अपनी बात को खींचते (निभाते) थे, अतः उनका उपनाम खीची (चौहान) हुआ। [46]
- शिवनाध-भास्कर (प्र.भा.- शिवनाथसिंह) के अनुसार 'खीची' चौहानों की शाखा है। दुर्भिक्ष (अकाल) के समय शरण आए हुए अनेक राजाओं को 'खीच' खिलाकर जीवित रखने के कारण 'खीची' नाम पड़ा। हम्मीर (रणथंभोर) के वंशजों की बड़ी शाखा 'खीची' नाम से प्रसिद्ध हुई। [47]
- हिन्दी विश्वकोष (जि. 6, पृ. 45) में अंकित है- खीची (चौहान राजपूतों) की एक शाखा है। इन्होंने किसी समय देवी भगवती को एक पात्र खिचड़ी भोग लगाया था। देवी ने सन्तुष्ट होकर इनको किसी स्थान में जाने को कहा। वहां उन्होंने बहुत-सा सोना-

चांदी पाया। तभी से वे खीचड़ी नहीं खाते। इस 'खीचड़ी' से वे 'खीची' कहलाए। सांभर के राजा मार्णकराव (चौहान) के पुत्र अजयराव उन्हीं के पूर्व-पुरुष थे। [48]

- पुस्तक 'हिन्दू पति विजय' (ॐकारलाल व्यास, राघोगढ़) के अनुसार 'खीची' चौहानों की एक शाखा है क्योंकि वे चौहान क्षत्रिय, शत्रुओं को संहार करने अहर्निश तलवार खींचे रहते थे, इसी कारण 'खीची' (चौहान) कहलाए। [49]
- आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया (झारकोन बजरंगगढ़, म. प्र.) के अनुसार देवी के वरदान से सोना-चांदी मिश्रित धन पाने व देवी की पूजा कर प्रसन्न करने से चौहान (संभरी) खीची कहलाए और वे खिचड़ी नहीं खाते। [50]

4. खीचड़ी / खीच खाने के कारण

- नैणसी री ख्यात प्र.भा. पृ. 184 एवं 250 - 51 में खीची चौहानों को नाडोल के राव लाखण का वंशज बताया गया है और लिखा है कि लाखण की पीढ़ावली में लाखण, बल, सोही, महरराव, अणहिल, जिंदराव, आसराव, माणकराव, हुए I आगे 'खीची' कहलाने का निम्न कारण बताया है-

चौहान माणकराव (नाडोल) आसराव रो बेटो। माणकराव ने आसराव कहयौ तरे वो नागोर री पटी 84 सारी ही, भदांण इण दीठी। जायल कांनी नीसरीयो, तरे उठे ग्वार (ग्वारिया जाति) उत्तरयि था ने ओ पिण सारा दिन रो भूखो हुवो हुतो। तरै गवारे मनवार कीवी। चावल मूंगों रो खीचड़ी तयार भी। माणकराव चढ़िया हीज खाधी। तरै बाप कहयौ भू तो खीचड़ी खादी तो थांहरो नख खीची (उपाधि) दे दी, ने वा धरती दी। घेऊ तौड़ां भदांणो व जायल घेऊ राजधांन कर कोट कराया।

अर्थात् आसराव ने अपने पुत्र माणकराव से कहा कि एक दिन में सूर्योदय से सूर्यास्त तक जितनी भूमि में फिर कर आएगा वह भूमि मैं तुम्हें दे दूँगा I तब माणकराव दिन निकलते ही चला और संध्या तक नागौर पट्टी के 84 गाँवों की सीमा (नागोर – चौरासी) में होता हुआ भदाण (जहाँ उसने गढ़ बाँधने का विचार किया) होकर जायल पहुँचा जहाँ उसने भूख लगने एवं कम समय होने के कारण गवारियों (बैल लादने वाली एक जाति) की बगैर पकाई कच्ची खिचड़ी (चावल और मूंग दल की)ऊँट पर बैठे- बैठे ही खा ली और संध्या होते- होते वो अपने पिता आसराव के पास पहुँच गया I

पिता आसराव ने जब उससे यह सारा वृतान्त सुना तो उसने अपने पुत्र माणकराव चौहान को दिन भर में उसके द्वारा पार की गई भूमि प्रदान करते हुए कहा कि आगे से तुम्हारी संतान (वंश शाखा) खीचड़ी खाने के कारण 'खीची' कहलाएगी, और उसे भदाणा एवं जायल दोनों स्थानों पर अपने किले और राजधानियाँ बनाने को कहा I इस पर माणकराव ने उक्त दोनों स्थानों पर किले बनवाकर वहां अपनी दो राजधानियाँ कायम की I इस प्रकार नैणसी की ख्यात में खीची चौहान शाखा का उद्भव नाडोल के शासक आसराव के पुत्र माणकराव से होना बताया गया है I

यद्यपि नैणसी ने चावल और मूंग की खिचड़ी का जिक्र किया है किन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस सम्पूर्ण इलाके में ऐसी खिचड़ी का प्रचलन न होकर वहाँ की पैदावार बाजरा और मोठ को दाल में मिलकर पकाए जाने वाला खींच खाया जाता है I इसलिए 'खींच' से खीची नाम पड़ना अधिक संभव लगता है I [51]

इस मत का समर्थन 'चौहान कुल कल्पद्रुम' में भी किया गया है एवं तर्क दिया गया है कि नाडोल के माणकराव के पुत्र अजयराव का राज्य राजपूताना की नागौर पट्टी में भदाणा व जायल में था तथा अजयराज ने खिलचीपुर (मालवा) भी नहीं बसाया था और न खिलचीपुर से उसका कोई ताल्लुक उस समय में था, बल्कि खीची चौहानों को मालवे में जाने का प्रसंग कई पुश्तों बाद मिलता है, जो खिलचीपुर रियासत की ख्यात में भी उल्लेखित है जिसमें 'उग्रसेन' नामक पुरुष द्वारा खिलचीपुर में राज्य स्थापित करने का वर्णन किया गया है I [52]

इसी संबंध में इतिहासविद् गंगासिंह खीची द्वारा किये गए गहन विश्लेषण का अध्ययन करें तो पता चलता है कि नैणसी ने सत्रहवीं सदी में जो कुछ भी लिखा वो चारण-भाटों (रावों) आदि से पूछ कर लिखा है। देश-काल परिस्थिति अनुसार घटनाओं में कुछ हेर-फेर व कमी नुक्श होना स्वाभाविक है।

उन दिनों नाडोल के चौहानों का वैभव प्रसिद्ध था अतः हो सकता है कि माणकराव (सांभर) के बजाय माणकराव (नाडोल) भ्रम में मान लिया और उसके पिता का नाम आसराव जोड़ दिया ।

अतः गंगा सिंह खीची के अनुसार वास्तव में यह घटना माणकराव (सांभर) की थी और यह माणकराव (684 ई.–709 ई.) (टॉड के अनुसार इसका दूसरा नाम सामंत देव था) सांभर नरेश वासुदेव का पुत्र था । यह सोचने की बात है कि राव लाखणसी (लक्ष्मण)

ने सांभर से जाकर नाडोल राज्य बनाया और सांभर पर उनके ज्येष्ठ भ्राता का शासन था। बाद की पीढ़ियों में नाडोल में आसराव व माणकराव हुए। नाडोल वालों को क्या अधिकार था कि सांभर क्षेत्र में घूम कर फिर उसे सांभर क्षेत्रीय नागोर-जायल-भदांणा मिले। नाडोल का माणकराव बहुत बाद में हुआ जब कि खीची शाखा बहुत पहले हो चुकी थी और खीचियों का राज्य खिचपुर पट्टण (सिंध सागर दोआब पंजाब) बनने के बाद सन् 713 ई. में खीची शासक ने मोहम्मद बिन कासिम (अरब सेनापति) से संघर्ष किया और बाद में उसे कासिम ने गद्दी से हटा दिया पर खीचियों का राज्य बना रहा, वहां से भी पीछे हटने के बाद खीची नरेश जायल भदाणा पुनः लौटे और जायल भदांणा पुनः आबाद कर राज्य बनाये। अतः खीची शाखा नाडोल से नहीं निकली बल्कि सांभर से ही निकली हुई मानी जा सकती है I [53]

माणकराव (सांभर) के पिता ने जब देखा कि उनके पुत्र माणकराव ने कठोर परिश्रम कर आज्ञा पालन करते हुए लम्बी-चौड़ी भूमि घेरी और बिना जाति भेदभाव (ऊँच- नीच) के प्रजा की ग्वारिया जाति के यहां भी खीच (खिचड़ी) खाकर स्नेह-भाव बताया जो प्रजा वात्सल्य का श्रेष्ठ उदाहरण है। राज्य पाने के योग्य है अतः उक्त घटना की स्मृति में यह खीच खाने से खीची की उपाधि दी। [54]

5. अन्य मत

- डॉ. कालिकरंजन कानूनगो ने शेरशाह एण्ड हिज टाइम्स (1965 ई. पृ. 326) में उल्लेख किया है कि इन चौहानों की एक जाति का नाम 'खीची' उचित पड़ा जो कि अपने शौर्य एवं युद्ध कला द्वारा देश व धर्म रक्षार्थ वंश परम्परागत शत्रुओं पर क्रोधित हो भयंकर आक्रमण कर उन्हें मार-काट कर नष्ट-भ्रष्ट कर देते थे जो तत्कालीन राजनीतिक दृष्टिकोण में जैसे को तैसा श्री कृष्णनीति अनुसार करने में संकोच नहीं करते थे और खीच खिलाने (खीच पर खाटा डालने) में अद्वितीय थे, एक राजपूत कहावत अनुसार ये (खीच पर खाटा डालने) में अद्वितीय थे I यह विशेष गुण एवं चरित्र (शत्रुओं को मृत्यु का शर्बत पिलाना) उन्हें 'खीची' उपनाम दे गया। [55]

- **निष्कर्ष (खीची चौहानों का उद्गम एवं खीची उपनाम) :** विभिन्न विद्वानों के मतों एवं उपलब्ध साहित्य के विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि चौहानों की 'खीची शाखा' नाडोल से न निकल सांभर से ही निकली है एवं इस खीची शाखा का आरंभिक उद्गम स्थल भी सांभर की ही उपशाखा, माणकराव द्वारा स्थापित नागौर- चोरासी क्षेत्र (जायल- भदाणा) रहा होगा।

माणकराव (सामंतदेव) ने नागौर- चोरासी क्षेत्र (जायल- भदाणा) का शासन एक छोटे पुत्र के रूप में किया था तथा अपने बड़े भाई दौलत राव की मृत्यू उपरान्त सांभर की गद्दी भी प्राप्त कर ली परन्तु उसके दूसरे पुत्र – अजय राव ने पंजाब के सिंध- सागर दोआब क्षेत्र में स्थित खीचपुर- पट्टन में अपने को स्थापित किया। खीचपुर- पट्टन में अजय राव के वंशज निम्नानुसार हुए –
अजय राव - लखन राव - गोविन्द राव - संग्राम राव (सांगो राव) - बेनी राव - जोध सिंह (इसने 852 ईस्वी में अपने पूर्वजों के क्षेत्र जायल में पुनः जाकर अपना नया राज्य बनाया) 56

रही बात इनके खीची उपनाम की तो एक चर्चित मत माधोसिंह खीची का है कि सांभर के चौहान बातों को खींचते (निभाते) थे, तथा 'हठ' (सत्य-दृढ़-प्रतिज्ञा) करने वाले थे, अतः उनका उपनाम खीची (चौहान) हुआ। परन्तु यदि सांभर के चौहानों के लिए यह उक्ति प्रसिद्ध होती तो समस्त चौहान खीची कहलाते परन्तु ऐसा नहीं है और पहले के किसी ग्रन्थ या ख्यात में भी यह उल्लेखित नहीं है, अतः इसे कल्पना ही माना जाएगा।

अतः सांभर के माणकराव द्वारा खीच खाए जाने से और फिर उसके पुत्र अजयराव चौहान के पंजाब के खीचपुर पट्टन क्षेत्र में स्थापित हो जाने से संभवतः इस शाखा के वंशज खीची कहलाने लग गए होंगे। आज भी राजस्थान में मारवाड़ क्षेत्र से पलायन कर मेवाड़ में आये ब्राह्मण एवं वैश्य परिवार आम बोल-चाल की भाषा में मारवाडा कहलाते हैं – यह एक युक्तियुक्त मत हो सकता है । खीची उपनाम के बारे में और अधिक स्पष्टता के लिए उच्चतर शोध कार्य अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. टॉड, Annals and antiquities of Rajasthan, Vol. 2, अध्याय 26, पृ. 542,550 पर्सनल नेरेटिव

2. खीची चौहान इतिहास संग्रह, पार्ट 1, 1933 : ठाकुर माधो सिंह, सोहनगढ़, जिला – फिरोजपुर, खीची, पृ. 12,13
3. रूलर्स ऑफ़ इण्डिया सीरीज – माधोजी पटेल सिंधिया, पृ. 113-117, एच.जी. कीन
4. गंगा सिंह खीची, 'मारवाड़ में खीचियो का योगदान' प्रथम संस्करण, 2019 , पृ.22, खीची चौहान शोध संस्थान, इन्द्रोका
5. वही, पृ. 23
6. वही पृ. 23
7. हमीर महाकाव्य जि. 12 भा. श्लोक 264
8. गंगा सिंह खीची, 'मारवाड़ में खीचियो का योगदान' प्रथम संस्करण, 2019 , पृ.24, खीची चौहान शोध संस्थान, इन्द्रोका
9. वही पृ.24
10. सर्वे ऑफ़ खीची चौहान हिस्ट्री : A.H. निजामी और R.S.खीची, पृ. 3
11. डॉ. देवीलाल पालीवाल : जवास के पावेचा खीची चौहान तथा भोमट के अन्य ठिकाने, पृ.13, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
12. वही पृ.13
13. वही पृ.13
14. आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, उ.प्र., जि. 2 पृ. 16
15. डॉ. देवीलाल पालीवाल : जवास के पावेचा खीची चौहान तथा भोमट के अन्य ठिकाने, पृ.14, राजस्थानी ग्रंथागार,
16. जोधपुर
17. वही पृ. 13
18. वही,पृ.13
19. Annals Vol. II, पृ. 490, उद्धृत आर.बी.सिंह
20. टॉड कृत राजपूत जातियों का इतिहास, अनुवादक डॉ. देवीलाल पालीवाल, पृ. 156
21. 'खीची राज्य का इतिहास', बडवा भाट, ढाढोन्या (परगना – राघोगढ़) की महिला गुलाब बाई और जसकरण की
22. पोथियों की हस्तलिखित नकल, दिनांक 1956-02-04, मुकाम - ढाढोन्या, (देराश्री संग्रह, बनेड़ा)
23. वही
24. वही
25. सर्वे ऑफ़ खीची चौहान हिस्ट्री : A.H. निजामी & R.S.खीची, पृ. 3
26. वही, पृ. 6
27. गंगा सिंह खीची, 'मारवाड़ में खीचियो का योगदान' प्रथम संस्करण, पृ .27, खीची चौहान शोध संस्थान, इन्द्रोका
28. वही, पृ. 32
29. वही, पृ. 33
30. वही, पृ .33
31. वही, पृ .33
32. वही, पृ .33
33. वही, पृ .33
34. वही, पृ .33
35. वही, पृ .33
36. वही, पृ .33
37. वही, पृ .34
38. वही, पृ .34
39. वही, पृ .34
40. वही, पृ .34
41. वही, पृ .34
42. वही, पृ .34
43. वही, पृ. 34

44. वही, पृ .35
45. वही, पृ .35
46. वही, पृ .35
47. वही, पृ .35
48. खीची चौहान इतिहास संग्रह, पार्ट 1, 1933ठाकुर माधो सिंह : , सोहनगढ़, जिला फिरोजपुर –, खीची, पृ .25
49. गंगा सिंह खीची, 'मारवाड़ में खीचियो का योगदान' प्रथम संस्करण, 2019, पृ .35, खीची चौहान शोध संस्थान, इन्द्रोका
50. वही, पृ .36
51. वही, पृ .36
52. वही, पृ .36
53. डॉ. देवीलाल पालीवाल : जवास के पावेचा खीची चौहान तथा भोमत के अन्य ठिकाने, पृ. 20, राजस्थानी ग्रंथागार,
54. जोधपुर
55. देसाई, लल्लुभाई भीमभाई, (1927), 'चौहान कुल कल्पद्रुम', पृ. 91, बडौदा – श्री लुहाणा मित्र स्टीम प्रिंटिंग प्रेस
56. 'मारवाड़ में खीचियो का योगदान' प्रथम संस्करण, 2019, पृ .37, खीची चौहान शोध संस्थान, इन्द्रोका
57. वही, पृ.38
58. वही, पृ.38
59. डॉ. देवीलाल पालीवाल : जवास के पावेचा खीची चौहान तथा भोमत के अन्य ठिकाने, पृ. 21, राजस्थानी ग्रंथागार,
60. जोधपुर